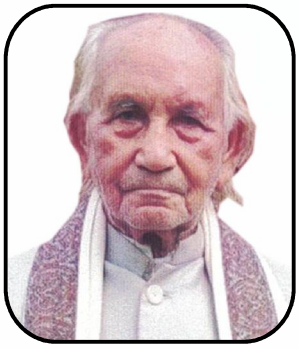

SHRI REBA KANTA MAHANTA

Shri Reba Kanta Mahanta, the Sattradhikar of Khatpar Sattra, Sibsagar, Assam is known for dedicating his life in the services of sattras and Sattriya Culture and occupies a distinguished place in Satriya mask making and promoting Mukha Bhaona (a dance drama where the actors play their roles wearing mask).

2. Born on 19th April, 1935, Shri Mahanta learnt the art of making masks and performing Mukhabhaona from his sattradhikar father. He took initiative to establish Hahchara Girls' High School and retired as a Head Master in 1996. He served the District Sattra Mahasabha as General Secretary for 27 years and President for 2 years. He is life time member of Asom Sahitya Sabha and Satra Mahasabha. He has written many articles on religion, culture and mask making in various newspaper, magazines and souvenirs.

3. Shri Mahanta has established a unique museum in his own Satra campus which reflects the artefacts, musical instruments and masks etc. related to Satriya Culture and this museum attracts the footfalls of different visitors and tourists from different places of the state and country and even from abroad also. His artistic creations are also being displayed and demonstrated in different institutes, museums and universities etc. In 1989 on invitation of Craft Council of India, he took part in Exhibition cum Workshop at Eden Garden, Kolkata about mask making and its uses and from the exhibition 5 masks were taken to distant Russia and Japan to preserve in their museums. His masks were procured by Indian Museum, Kolkata; National Museum, Washington and IGNCA, New Delhi for preservation in their respective museums. In 2016, Tezpur Central University procured one huge mask of Narasingha (Bormukha) for demonstration and preservation in its museum. In 2017 by using different types of masks, he built a Welcome Gate at Lokpriya Gopinath Bordoloi International Airport, Guwahati which wore a global look at that time. In 2018, Australia procured 2 masks for demonstration and preservation in their museums.

4. As an expert master artist and instructor, Shri Mahanta showcased his performances and conducted different workshops in different parts of the country such as “Ram Vijoy” Bhaona in Delhi and Vrindavan (1975); NE India cultural function (1976); Khol- Ba Don and Chordhora Bhaona in All India Radio, Dibrugarh (1998); at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra (SSKS), Panjabari, Guwahati, Assam (1999). In 2004, he was invited to International Ramayana Festival, Trivendrum and demonstrated two Ankla Bhaona viz. Kiskindhya Kanda and Sundara Kanda. In 2010, he performed Shyamantaharan *B*haona and demonstrated masks in the Commonwealth Games Festival held in New Delhi. In 2013, he demonstrated various Mukhas in the Independence Day celebration at Guwahati on invitation of Hon'ble Chief Minister, Assam. In 2003, he represented Assam in the Republic Day parade with the mask making tableau and cultural performance and bagged second prize for the state of Assam.

5. Shri Mahanta has been honoured by Government of Assam and Government of India with various awards. In 2003, Government of Assam awarded State Award for Excellence in Handicrafts. In 2008, he received Shilp Guru Award from Ministry of Textiles, Government of India. In 2015, Government of India honored Sangeet Natak Academy Award for his excellence and pioneering works. Government of Assam awarded Bishnurabha State Award in 2019 for excellence in mask making. In the long span of his life, at the age of 90 years he has received felicitation and encouragement from more than 100 organizations.

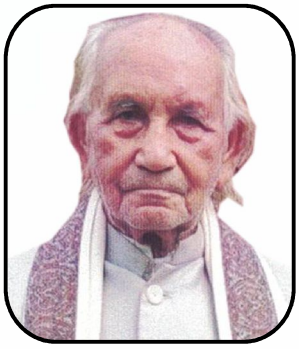

श्री रेवकांत महन्त

असम के शिबसागर स्थित खटपर सत्रा के सत्राधिकारी श्री रेवकांत महन्त को अपना जीवन सत्राओं और सत्रीया संस्कृति की सेवा में समर्पित करने के लिए जाना जाता है तथा वह सत्रीया मुखौटा निर्माण और मुख भावोना (एक नृत्य नाटक जिसमें अभिनेता मुखौटा पहनकर अपनी भूमिका निभाते हैं) के प्रचार–प्रसार में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

2. 19 अप्रैल, 1935 को जन्मे, श्री महन्त ने अपने सत्राधिकार पिता से मुखौटे बनाने और मुख भावोना करने की कला सीखी। उन्होंने हाचरा गर्ल्स हाई स्कूल की स्थापना की पहल की और वर्ष 1996 में हेडमास्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 27 वर्षों तक जिला सत्रा महासभा के महासचिव और 2 वर्षों तक अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह असम साहित्य सभा और सत्रा महासभा के आजीवन सदस्य हैं। उन्होंने विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और स्मारिकाओं में धर्म, संस्कृति और मुखौटा बनाने पर कई लेख लिखे हैं।

3. श्री महन्त ने अपने सत्रा परिसर में एक अनूठा संग्रहालय स्थापित किया है जिसमें सत्रीया संस्कृति से संबंधित कलाकृतियां, संगीत वाद्ययंत्र और मुखौटे आदि प्रदर्शित हैं और यह संग्रहालय राज्य और देश के विभिन्न स्थानों और यहां तक कि विदेशों से भी विभिन्न आगंतुकों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। उनकी कलात्मक कृतियाँ विभिन्न संस्थानों, संग्रहालयों और विश्वविद्यालयों आदि में दिखाई जा रही हैं और उनका प्रदर्शन भी किया जा रहा है। वर्ष 1989 में, भारतीय शिल्प परिषद के निमंत्रण पर, उन्होंने मुखौटा निर्माण और इसके उपयोग के बारे में ईडन गार्डन, कोलकाता में प्रदर्शनी सह कार्यशाला में भाग लिया और प्रदर्शनी से 5 मुखौटे सुदूर रूस और जापान में उनके संग्रहालयों में संरक्षित करने के लिए ले जाए गए। उनके मुखौटे भारतीय संग्रहालय, कोलकाता; नेशनल म्यूजियम, वाशिंगटन और आईजीएनसीए, नई दिल्ली द्वारा उनके संबंधित संग्रहालयों में संरक्षण के लिए खरीदे गए थे। वर्ष 2016 में, तेजपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपने संग्रहालय में प्रदर्शन और संरक्षण के लिए नरसिंह (बोरमुखा) का एक विशाल मुखौटा खरीदा था। वर्ष 2017 में, विभिन्न प्रकार के मुखौटों का उपयोग करके, उन्होंने गुवाहाटी के लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक स्वागत द्वार बनाया, जो उस समय वैश्विक स्तर पर आकर्षण का केंद्र बन गया था। वर्ष 2018 में, ऑस्ट्रेलिया ने अपने संग्रहालयों में प्रदर्शन और संरक्षण के लिए 2 मुखौटे खरीदे।

4. एक विशेषज्ञ मास्टर कलाकार और प्रशिक्षक के रूप में, श्री महन्त ने देश के विभिन्न हिस्सों जैसे दिल्ली और वृंदावन में "राम बिजॉय" भावोना (1975); पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक समारोह (1976); खोल–बा डॉन और चोरधोरा भावोना, ऑल इंडिया रेडियो, डिब्रूगढ़ (1998); श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र (एसएसकेएस), पंजाबारी, गुवाहाटी, असम (1999) में अपनी कला का प्रदर्शन किया और विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित कीं। वर्ष 2004 में, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव, त्रिवेंद्रम में आमंत्रित किया गया और उन्होंने दो अंकला भावोना यानी किष्किंधा कांड और सुंदर कांड प्रदर्शित कीं। वर्ष 2010 में, उन्होंने श्यामंतहरण भावोना का प्रदर्शन किया और दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल महोत्सव में मुखौटों का प्रदर्शन किया । वर्ष 2013 में, उन्होंने असम के माननीय मुख्यमंत्री के आमंत्रण पर गुवाहाटी में स्वतंत्रता दिवस समारोह में विभिन्न मुखौटों का प्रदर्शन किया। वर्ष 2003 में, उन्होंने गणतंत्र दिवस परेड में असम का प्रतिनिधित्व करते हुए मुखौटा बनाने की झांकी प्रस्तुत की तथा सांस्कृतिक प्रदर्शन में असम राज्य के लिए दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया।

5. श्री महन्त को असम सरकार और भारत सरकार द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2003 में, असम सरकार ने हस्तशिल्प में उत्कृष्टता के लिए राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 2008 में, उन्हें भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय से शिल्प गुरु पुरस्कार मिला। वर्ष 2015 में, भारत सरकार ने उनकी उत्कृष्टता और अग्रणी कार्यों के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। असम सरकार ने मास्क बनाने में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2019 में बिष्णुरभा राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। अपने लंबे जीवनकाल में, 90 वर्ष की आयु में उन्हें 100 से अधिक संगठनों से सम्मान और प्रोत्साहन मिला है।